रिकॉर्ड :– दुखियों पे कुछ रहम करो..... ॐ पिताश्री 12/5/63
(आज क्लास में नए विज़िटर्स राजस्थान के वै(द्यों) का डिक्टेटर और उनका सेक्रेटरी आए हुए थे। सन्यासी तो रेग्युलर है ही) ओम शांति। ओम का अर्थ कई लम्बा–चौड़ा भी सुनाते हैं। ओम को ही ईश्वर भी कह देते हैं। अब ओम तो अक्षर है। इनको थोड़े ही ईश्वर कहा जाता। हाँ, चित्र है तो उनको ईश्वर कह सकते हैं। बाकी लिखे हुए अक्षर को ईश्वर नहीं कहा जाता। यह है ईश्वरी(य) कॉलेज अथवा गॉडली यूनिवर्सिटी। नाम लिखा हुआ है– पाठशाला। किसकी पाठशाला? राज्य–योग की। राजाई के लिए राज्य–योग। जैसे बैरिस्टरी योग कहा जाता है। तो किसको याद करना पड़ेगा? जो बैरिस्टर पढ़ाते हैं। तो बैरिस्टर और बैरिस्टरी को याद करना पड़े। पढ़ाने वाला ज़रूर आप समान बनावेंगे। पहले–2 तो कौन पढ़ाते हैं, वो समझना है। कई समझते हैं, ओम भगवान है। बाप समझाते हैं, ओम तो अक्षर है। ओम का अर्थ समझना है। सारी सृष्टि का रचयिता बाप, जिसको मोस्ट बिलवेड गॉड फादर कहा जाता है, वो है एक। ब्र०वि०शं० को हम मोस्ट बिलवेड नहीं कह सकते। वो रचना है। कहा भी जाता है– ब्रदरहुड। ज़रूर सभी आत्माओं का बाप एक है। ब्रदर्स को बाप से वर्सा चाहिए। ब्रह्म को ब्रह्म से वर्सा नहीं मिल सकता। इसी हालत में ब्र०वि०शं०, जिन्हों का रचयिता बाप है, वो भी ब्रदर्स हो गए। मनुष्यों की आत्माएँ, ब्र०वि०शं० भी आत्माएँ ही ठहरीं। वो सूक्ष्मवतन वासी, यह स्थूलवतन वासी। हैं तो रचना ना! ब्रदर्स हो गए। अब ब्रदर को ब्रदर से वर्सा मिल नहीं सकता। हरेक बात को समझना है; क्योंकि यह नई बात है ना! फिर से सो देवी–देवता धर्म की स्थापना होती है। इसको ईश्वरी(य) मशीनरी कहा जाता है। वो क्रिश्चियन मशीनरी, वो शंकराचार्य मशीनरी। यह है ईश्वरी(य) मशीनरी, इनका डिक्टेटर ईश्वर खुद है, जिसको मोस्ट बिलवेड गॉड कहा जाता है। उनका नाम है– शिव और बच्चों का नाम है– शालिग्राम। बाप समझाते हैं– (ओम) कोई गॉड नहीं है। ओम का तो अर्थ है– आई एम आत्मा। बाप कहते हैं– मैं फिर कहूँगा, अहम् प०। बच्चे अहम् आत्मा कहेंगे, प० या शिवोहम् नहीं कहेंगे। बाबा कहेंगे– आई एम साइलेंस। मैं परमपिता प० सभी शालिग्रामों का बाप हूँ। मैं शान्ति का सागर हूँ। तुम बच्चे भी कहेंगे– ओम शान्ति, शांत सागर के बच्चे हैं। बाप कहते हैं– तुम और हम जब निर्वाणधाम में रहते हैं, तो अहम् भी शांत, तुम भी शांत रहते हो। वो तो है ही साइलेंस। तुम आत्माओं को फिर अशांति में आना पड़ता है; क्योंकि तुम ही पूज्य, फिर पुजारी बनते हो। अब बाप बच्चों से सन्मुख बात कर रहे हैं। मैं भी इस शरीर में आकर ओम शांति कह सकता हूँ। आत्मा और प० दोनों ही निर्वाण, शांतिधाम में रहने वाले हैं। अभी मैं बच्चों के सन्मुख हूँ, जिन्होंने मुझे अपना बनाया है वर्सा लेने लिए। तुम जानते हो, बरोबर बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलेगा। अभी स्वर्ग की स्थापना और नर्क का विनाश होना है। नर्क के बाद स्वर्ग, स्वर्ग के बाद फिर नर्क होना है। तुम ... स्वर्गवासियों को नर्कवासी बनने में 84 जन्म लेने पड़ते हैं। बाप कहते हैं– मैं 5000 बरस पहले भी आया था। हम तुम अब मिले हैं। कल्प पहले भी मिले थे। कल्प–कल्पांतर मिलते रहेंगे। मैं तुम बच्चों को वो ही प्राचीन, 5000 बरस पहले जो सहज राज्य–योग और सृष्टिचक्र की आदि–मध्य–अंत का ज्ञान सुनाया था, सो अभी सुना रहा हूँ। यही यूरोपवासी यादव भी थे। अनेक धर्म भी थे। देवी–देवता धर्म जब प्रायःलोप हो जाय तब तो फिर से स्थापन करूँ। सतयुग से लेकर कलियुग तक की हिस्ट्री–जॉग्राफी बैठ समझाते हैं। उनको ही कहा जाता है– त्रिकालदर्शी। तुम बच्चों को भी त्रिकालदर्शी बनाते हैं। तीसरा नेत्र ज्ञान का दे रहे हैं इस समय; क्योंकि फिर से आए हैं वो ही देवी–देवता धर्म, जो प्रायःलोप हो गया है, जिसका ज्ञान भी प्रायःलोप हो गया है। ऐसे नहीं कि यह ज्ञान कोई परम्परा चलता है। बाकी हाँ, इस समय शिवबाबा ने इनको दिया, इसने तुमको ज्ञान दिया, तुम फिर औरों को देते हो। उनमें राजाएँ–सन्यासी आदि सभी आ जाते हैं। बाकी सतयुग में परम्परा नहीं चलता। अगर परम्परा

चले तो फिर प्रायःलोप नहीं कहा जाता। भारतवासी जानते नहीं कि हम किस धर्म के हैं। कह देते हिन्दू धर्म है। (सावरकर का मिसाल) तो उनको कहा गया– अच्छा, अब फिर आकर देवी–देवता धर्म के बनो, तुमको सहज राज्य–योग सिखलावें। बोले, फुर्सत नहीं। ऐसे बहुत आते हैं, कहते– यह नॉलेज तो बड़ी अच्छी है, हम फुर्सत लेकर आवेंगे। यहाँ से गया, खलास। यहाँ की यहाँ रही; जैसे बच्चा गर्भ से बाहर निकलता है तो वहाँ की वहाँ रही, फिर पाप कर्म करने लग पड़ते; जैसे जेल बड्र्स होते हैं, उन्हों को जेल अच्छा लगता है। भारतवासी, जो देवी–देवता धर्म के हैं, वो भी आधा कल्प गर्भ जेल के बड्र्स बन जाते हैं। सतयुग में गर्भ जेल नहीं कहा जाता। वो तो है गर्भ महल। सज़ाएँ गर्भ जेल में मिलती हैं। फिर वहाँ त्राह–2 करते हैं। सतयुग में तो यह बातें होती नहीं। बाबा ने समझाया है– यहाँ है मदर–फादर कंट्री। तुम मात–पिता है ना! जगदम्बा भी है। जगत पिता भी है। तुम मात–पिता..... यह महिमा कोई लौकिक माँ–बाप की नहीं है। जब गाते हैं, तुम मात–पिता..... तो नज़र ऊपर जाती है। भारत में ही स्वर्ग के सुख घनेरे थे। अभी वो न है। बाप कहते हैं– मुझे परमधाम से नीचे आना पड़ता है। पुरानी, पतित दुनिया और पतित शरीर में। ब्रह्मा की रात कहा जाता है तो पतित हुआ ना! बहुत जन्मों की अन्त में आते हैं। अभी तुम हो ब्रह्मा मुखवंशावली और वो ब्राह्मण हैं कुखवंशावली। प्रजापिता ब्रह्मा को कितने बच्चे हैं! अब कृष्ण के लिए लिखते हैं– 16108 राणियाँ थीं। यह भी भूल कर दी है। यह तो है प्रजापिता ब्रह्मा की बात। फिर कहते हैं ब्रह्मा की 8–10 भुजाएँ हैं। तो यह मनुष्य हो गए। कृष्ण को प्रजापिता ब्रह्मा नहीं कहेंगे। यह संगम की बात है ना! ब्रह्मा सो श्री कृष्ण बनते हैं। तो संगम होने कारण, उन्होंने भारी भूल कर दी है। ब्रह्मा को तो बहुत बच्चे और बच्चियाँ हैं ना! कृष्ण को कैसे शोभेंगे! उनको प्रजापिता नहीं कहेंगे। इनको तो बहुत बच्चे हैं। जगत अम्बा ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणी है। इनको देवी नहीं कहा जाता है। यह है ब्राह्मणी। अभी ज्ञान प्राप्त कर रही है। यह प्रजापिता भी ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। ईश्वर द्वारा यह है ज्ञान–ज्ञानेश्वरी जगत अम्बा। अर्थात् उनको ईश्वर द्वारा ज्ञान मिल रहा है। यह ईश्वर नहीं है, तो जगत अम्बा का मर्तबा ईश्वर से भी बड़ा! वो लक्ष्मी है राज–राजेश्वरी। यह है ब्रह्मा मुखवंशावली सरस्वती। इसको बाजा दिया है; क्योंकि ज्ञान–ज्ञानेश्वरी है। बाप और बच्चे, दोनों ज्ञान–ज्ञानेश्वर हैं। उन्हों को ज्ञान देने वाला है ज्ञान सागर शिव। यह बातें बहुत धारण करने की हैं। इसमें बुद्धि बड़ी प्रफुल्लित चाहिए। अगर बुद्धि प्युअर न होगी, कोई अशुद्ध भोजन आदि गया, तो ज्ञान सारा उड़ जावेगा, ठहरेगा नहीं। इसमें बड़ी परहेज है। माया ने गॉडरेज का ताला लगाय पत्थर बुद्धि बनाय दिया है। सब पत्थर बुद्धि हैं। अब मेरे द्वारा तुम सब कुछ जान गए हो। शास्त्रों में तो कुछ भी नहीं। बिल्कुल ही जैसे आटे में नमक जितना है। रामायण तो बिल्कुल झूठा है। फिर भी बन्दर, राम, सीताएँ आदि अक्षर हैं। इस समय सब बरोबर बन्दर बुद्धि हैं। 10–12 बच्चे पैदा करते रहते तो कुत्ते हो गए न! गॉड बाप आकर भगवती–भगवान बनाते हैं। भगवान बिना कौन बनावेगा! भगवान के साथ योग लगाने से नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनते हैं। तो ज़रूर प्रजा भी बनेगी। लक्ष्मी–नारायण के बच्चे भी बनेंगे। गोया यह सूर्यवंशी–चंद्रवंशी पूरी राजधानी स्थापन होनी है। क्या हठयोगी सन्यासी यह कार्य करेंगे? नहीं। वो है ही हठयोगी। यह है राजयोग। राजयोग जिन्दाबाद होता है। हठयोग मुर्दाबाद हो जावेगा। स्वर्ग जिंदाबाद तो नर्क मुर्दाबाद हो जावेगा। सतयुग की स्थापना कौन करेंगे? बाप। उनको ही क्रियेटर कहा जाता है। श्री कृष्ण भी रचना है। बच्चे बाप को ही पुकारते हैं। पूछते हैं– बाबा, हम कब से दुखी होना शुरू हुए? बाप बैठ बतलाते हैं– यह अखानी सारी भारत पर ही है, जब और धर्म वृद्धि को पाय लेते हैं, इस देवता धर्म को ज़रूर प्रायःलोप होना है, तब तो स्वर्ग की स्थापना मैं करूँ! यह मेरा पार्ट है, तब मैं ब्रह्मा तन में आता हूँ। यह अपने जन्म को नहीं जानते हैं। 84 जन्मों को तो जानना चाहिए न! अभी बाप बैठ बतलाते हैं– 21 जन्म तो बाप से वर्सा मिलता है, 63 जन्म रावण का वर्सा है। अभी तुम बच्चों को 84 जन्म की कहानी सुनाई जाती है– तुमको सुख के संबंध में भेजा, तुम सूर्यवंशी–चंद्रवंशी घराने में रहे 8 जन्म और 12 जन्म। बाकी एक जन्म तो सबसे ऊँचा है, इसको कहा जाता है– ईश्वरीय जन्म।

अभी तुम ईश्वर की संतान बने हो। इनके पहले तुम आसुरी संतान थे। 63 जन्म रावण के आसुरी संतान होते हैं, आसुरी गोद मिलती है। अभी यह है ईश्वरी(य) जन्म। यह सभी से सर्वोत्तम है। इनके बाद फिर 21 जन्म दैवी जन्म लेंगे। वो है डीटीज़्म। यह प्वाइंट्स अपन पास नोट करनी है।

गीता तो बहुत पढ़ते आए। अनेक गीताएँ हैं। सभी ने अपनी–2 मत चलाई है। कहाँ ईश्वरी(य) मत, कहाँ मनुष्यों की मत। तो इस समय तुमने ईश्वरी(य) गोद ली है। परमपिता प० मोस्ट बिलवेड बाप को अपना बनाया है। इसके बाद 8 जन्म सूर्यवंशी, फिर 12 जन्म चंद्रवंशी लेंगे। ल०ना० की कोई भी बायोग्राफी वा चरित्र नहीं है। कृष्ण को अगर द्वापर में ले जाते, तो ल०ना० के छोटेपन की जीवन कहानी कहाँ गई! कुछ भी समझते नहीं। अभी बाप कहते हैं– तुम हमारे बने हो। तुम 21 जन्म सुख के(को) भोग फिर वाममार्ग में गिरते हो। फिर मिलती है आसुरी 5 विकारों रूपी रावण की गोद। रावण भी कोई देखने में नहीं आया है, कर्म से मालूम पड़ता है। अभी बाप ने 84 जन्मों का पूरा हिसाब बताया है। इसको कोई निषेध कर नहीं सकते। ल०ना० के फिर बच्चे भी तो होंगे ना! नाम नहीं दिखाते हैं, ल०ना० दी फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड– ऐसे चलता है। और भी प्रिन्स–प्रिन्सेज़ बहुत रहते हैं; जैसे यहाँ भारत में विकारी राजा–राणी हैं, प्रिन्स–प्रिन्सेज़ हैं। सतयुग में महाराजा–महाराणी कहते हैं। त्रेता में राम–सीता को राजा–राणी कहा जाता है। यह सभी राज़ बाप समझाते हैं, भल कहते हैं– वेद–पाठशाला, गीता–पाठशाला; परन्तु कोई भी एम–ऑब्जेक्ट नहीं। राजनी(सी) विद्या में एम–ऑब्जेक्ट है। सतसंगों में कोई एम–ऑब्जेक्ट नहीं। कोई भी ऐसे नहीं बतावेंगे कि तुम नर से ना० बनेंगे। यह राज्य–योग बाप के सिवाए कोई सिखला न सके। तो उस बाप की श्रीमत पर चलना है। पाण्डव श्रीमत पर थे। कौरवों ने न मत ली, तब तो उन्हों का विनाश हुआ। भल कौरव गवर्मेन्ट को कितना भी कहेंगे कि श्रीमत पर चलो; परन्तु चलेंगे नहीं। जो कल्प पहले आए थे, वो ही आकर श्रीमत लेंगे। मत पर चलना, बलि चढ़ना मुश्किल है। बाप को ट्रस्टी बनाना पड़े। जनक ने भी ट्रस्टी बनाया तब जीवनमुक्ति पाई। बाप किसकी राजाई को लेंगे नहीं, यह तो ममत्व मिटाने लिए कहते हैं कि यह सब कुछ मुझे दे दो, ट्रस्टी बनो, जैसे मैं चलाऊँ वैसे चलो। जनक को चंद्रवंशी में मिला, सूर्यवंशी में नहीं। उनकी मिल्कियत कोई काम में थोड़े ही आई, जो बाबा भर कर देवे। बाबा बड़ा सौदागर है। अविनाशी ज्ञान रत्नों का व्यापारी है। बाबा कहते हैं– मेरे मीठे–2 लाडले सिकीलधे बच्चे। पूछते हैं– बाबा, सभी आपके सिकीलधे नहीं हैं? नहीं बच्चे, तुम बच्चे ही 5000 बरस बाद आए (मि)ले हो। भल सारी सृष्टि मिलती है; परन्तु वो मुझे नहीं जानते। जानेंगे वो जो देवी–देवता धर्म वाले थे। उनको ही आकर फिर वर्सा लेना है। देखते हैं, कहाँ तक ज्ञान की टेस्ट बैठती है, फिर कहेंगे– यह सिकीलधे हमारे कुल के हैं। तुम हो रूहानी पण्डे। तुम ले जाते हो शांतिधाम, सुखधाम। तुम्हारी यात्रा अब चालू है। तुम शिवबाबा के नज़दीक, मुक्तिधाम के नज़दीक जा रहे हो। पहुँच कर फिर जीवनमुक्ति में चले आवेंगे। यह बातें और कोई समझा न सके। तुम ही पूज्य थे फिर पुजारी बने। कितना समय लगा? 84 जन्म। वो तो 84 लाख जन्म कह देते। गरुड़ प्राण(पुराण) में सभी रोचक बातें दी हैं कि मनुष्य जास्ती पाप न करे। बाप कहते हैं– यहाँ परहेज़ बहुत है। देवताओं को हमेशा शुद्ध भोग लगाया जाता है, वो ही तुमको खाना है। वो है हठयोग ऋषि, तुम हो राजऋषि। फिर तुम बादशाह बनेंगे। जगदम्बा ज्ञान–ज्ञानेश्वरी का मर्तबा अभी बड़ा है। जगदम्बा का कितना बड़ा मेला लगता है! लक्ष्मी की पूजा तो बरस–2 करते हैं। व्यापारी लोग महालक्ष्मी(चतुर्भज) की पूजा करते हैं। वो चतुर्भज है। विष्णु भी चाहिए ना! यहाँ

जगदम्बा 21 जन्मों का वर्सा देती है। लक्ष्मी देती है बरस–2 अल्प काल के सुख लिए थोड़े पैसे। तो जगदम्बा बड़ी हुई। इस समय 21 जन्म का राज्य–भाग्य दिलाती है। वो ही लक्ष्मी फिर अल्प काल लिए पैसे देती है। उनसे बरस–2 भीख माँगते हैं। अच्छा, फिर भी बाबा कहते हैं– श्वासों श्वास शिवबाबा को याद करो। वो मोस्ट बिलवेड है। कहते हैं– यह अन्तिम जन्म मेरी याद में रह पवित्र बने तो मेरे पास आए पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। अगर विकार में गए तो फिर बड़ी सज़ा है, कुल–कलंककित बन पड़ेंगे। फिर चण्डाल का जन्म मिलेगा। 5 विकार का दान दे फिर वापिस लिया तो हरिश्चन्द्र की कथा है ना! चण्डाल उनको कहा जाता, जो शमशान में मुर्दे को जलाते हैं। रॉयल घराणे के चण्डाल अलग, प्रजा की चण्डाल अलग होगी। अलग–2 शमशान होंगी। बच्चों को समझाते हैं– खबरदार रहना! मैं धर्मराज कालों का काल हूँ। सभी आत्माओं को वापिस ले जाने आया हूँ। शांतिधाम जाऊँगा, फिर सुखधाम भेज दूँगा। बाबा कहते हैं– फिर विकार में न जाना। पहले–2 है अशुद्ध अहंकार, बाद में और विकार आते हैं। देह–अभिमान आने से ही गिरते हैं। देही–अभिमानी गिरेंगे नहीं। पहले–2 देही–अभिमानी भव। मेरे साथ योग लगाने से फिर माया का वार न होगा। माया बड़ी प्रबल है। कोई अपवित्र का खाया तो बुद्धि में रोला पड़ जावेगा; इसलिए बाबा कहते हैं– अपने हाथ का बनाए खाओ।

यह कलियुगी दुनिया है– वैश्यालय। सतयुग को कहा जाता है– शिवालय। शिव ने आकर स्थापना की। भारत शिवालय था। अब वैश्यालय है। समझते हैं, साधु लोग शिवालय बनावेंगे; परन्तु शिवालय तो शिवबाबा बिगर कोई बना नहीं सकते। कहते हैं– मैं साधुओं का भी आकर उद्धार कराता हूँ इन माताओं द्वारा। कुमारियों द्वारा बाण मरवाए हैं ना! सन्यासी भी बहुत आते हैं। असुल देवता धर्म के हैं। कनवर्ट हो गए हैं तो फिर आ जावेंगे। बाप कहते हैं– सर्वधर्मान्..... मैं हिन्दू हूँ, मुसलमान हूँ, यह छोड़ दो, अपन को देही समझो। मेरे साथ योग लगाओ। अभी तुम्हारा अन्तिम जन्म है। मैं गाइड बन आया हूँ। फिर अन्त मते सो गते हो जावेगी। एक/दो को सावधान करना है। पापों का बोझा बहुत सिर पर है। जब तक स्थापना पूरी न हुई है, विनाश का समय न आया है, तब तक विकर्मों का हि(स्सा) रह जाता है। कर्मातीत बन जावेंगे फिर शरीर छूट जावेगा। फिर यह क्लास पूरा हो जावेगा। जां जीऊँ तां पढ़ना है। ब्रह्मा भी 100 बरस बाद शरीर छोड़ देंगे, तब तक पढ़ना है। बाकी लड़ाई आदि की रिहर्सल तो होती रहेगी। तुम ज्ञान में रिफाइन होते रहेंगे। वहाँ फिर बॉम्ब्स भी रिफाइन होते रहेंगे; क्योंकि फिर कोई हस्पतालें आदि तो रहेंगी नहीं, कौन संभाल करेगा! इसलिए रिफाइन बनाते हैं कि पूरे खलास हो जाय। आत्मा को ही दुख होता है। तरस भी उन पर पड़ता है। धर्मराज सज़ा देते हैं तो भी शरीर धारण कराते हैं। बाप कहते हैं– आत्मा दुखी न हो; इसलिए इन नैचरल कैलेमिटीज़ आदि से जल्दी–2 खलासी होगी। बाबा ने समझाया है– रुद्रमाला है फाइनल। अभी तो अजन पुरुषार्थ चल रहा है। अभी तो रेस है। कम्प्लीट माला बन न सके। अदल–बदल होती रहती है। फिर दाणा निकालना, एड करना पड़े। अंत में कम्प्लीट रुद्रमाला बनेगी, फिर विष्णु की वैजयन्ती माला। विजय प्राप्त कर विष्णु की माला बनेगी। तुम सभी के सजण(सज्जन) भी हो, तो दुश्मन भी हो। तुम कहते हो, यह अनेक धर्म सभी खलास हो जाए, तो फिर हम राज्य करें। तो दुश्मन ठहरे ना! बहुत वण्डरफुल नॉलेज है। देखो, वै(द्यों) का डिक्टेटर आया हुआ है। बाबा भी है अविनाशी वैद्य। योग से हम 21 जन्म एवरहेल्दी बन जाते हैं। जो पूरा योग रखेगा वो ही एवर हेल्दी बनेगा। कितनी सिम्पल नॉलेज है! अच्छा, बच्चों को नमस्ते। ॐ

अच्छा, सर्व सेन्टर्स के भाई–बहनों को ..... की विद्या का यादप्यार स्वीकार करना और .....।